आध्यात्मिक मूल्यों से जुड़कर विज्ञान बनेगा कल्याणकारी

ज्ञानसरोवर (माउण्ट आबू)। विधानसभा उपाध्यक्ष रामनारायण मीणा ने कहा कि भौतिक संपदा का मूल्य तो हम समझते है, लेकिन आंतरिक संपदा के महत्व को जानकर उसका अनुभव करने के लिए आध्यात्मिकता को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने की जरूरत है। वे ब्रह्माकुमारीज़ संगठन के वैज्ञानिक एवं इंजीनियरिंग प्रभाग की ओर से 'जीवन उत्कर्ष के लिए सम्पूर्ण बुद्धिमता' विषय पर आयोजित सम्मेलन के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक व भौतिक संपदा के समन्वय से वसुधैव कुटुंबकम को चरितार्थ किया जा सकता है। विज्ञान की शक्ति के चमत्कार ने आवागमन के तीव्रगति वाले साधन उपलब्ध करवाकर भले ही एक देश से दूसरे देश की दूरी कम कर दी, लेकिन दिलों के बीच की दूरी को आध्यात्मिकता के माध्यम से ही समाप्त किया जा सकता है। विज्ञान में यदि आध्यात्मिक मूल्यों को न जोड़ा गया, तो विज्ञान ही विश्व के विनाश का कारण बन जाएगा।

विधानसभा उपाध्यक्ष रामनारायण मीणा, ब्र.कु.निर्मला, ब्र.कु.निर्वैर, ब्र.कु.सरला, ब्र.कु.मोहन सिंघल, ब्र.कु.भारत भूषण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए।

ज्ञान सरोवर परिसर की निदेशिका डॉ.निर्मला ने कहा कि पाप का मुख्य कारण आत्मज्ञान की कमी है। सकारात्मक चिंतन मनुष्य को आत्मिक कल्याण के विचारों से परिपूर्ण करता है। जिससे अध्यात्म की प्राप्ति होती है और अध्यात्म ही वह प्रकाश है, जो अंशाति उत्पन्न करने वाले विचारों का त्याग कराने में सार्थक है।

ब्रह्माकुमारी संस्था के महासचिव ब्र.कु.निर्वैर ने कहा कि सर्व भौतिक सुखों के बीच भी आज मानव सुख शांति के लिए भटक रहा है। भौतिक साधनों की अधिकता ने उसे संतुष्ट करने की बजाय भ्रमित ही किया है। आध्यात्मिकता से संपन्न व्यक्ति साधनों के अभाव में भी सुख शांति का अनुभव कर सकता है।

ब्रह्माकुमारीज वैज्ञानिक एवं इंजीनियरिंग की अध्यक्षा ब्र.कु.सरला ने कहा कि राजयोग के नियमित अभ्यास से सकारात्मक बुद्धि, आत्म-विश्वास और सतर्कता का विकास होता है। राजयोग से न केवल हमारी मन की शक्तियों को बल मिलता है, बल्कि उसका तन पर भी प्रभाव पड़ता। जिससे विभिन्न प्रकार की व्याधियों से निजात पाकर तन स्वस्थ रहता है। आध्यात्मिकता मूल्यों से सम्पन्न बनाती है और मूल्य ही सुख व शांति के आधार है।

प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. मोहन सिंघल, ब्र.कु.स्वामीनाथन, ब्र.कु.जवाहर मेहता, ब्र.कु.भरत व ब्र.कु.भारत भूषण ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया।

प्रोत्साहन देकर बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाएं

शांति सरोवर (सिरसा)। अपने भीतर छुपी हुई प्रतिभा का ताला खोलने की मास्टर चाबी है खुशी। हम जीवन में जो कुछ भी करें खुशी से करें। विशेष कर भोजन बनाते और खाते समय अपने मन को शांत और खुश रखना चाहिए क्योंकि इसका हमारे स्वास्थ्य पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। आजकल बच्चे इन्टरनेट पर ढूंढते हैं कि जीवन क्या है, जबकि यह कला मां-बाप द्वारा अपने बच्चों को अपने व्यवहारिक जीवन से सिखानी चाहिए।

उक्त विचार ब्र.कु.स्वामीनाथन् ने 'जागृत करें अपनी छिपी हुई प्रतिभा को' विषय पर आयोजित चार दिवसीय शिविर को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि बच्चों को सुसंस्कृत बनाने के लिए मां-बाप तथा प्राइमरी शिक्षकों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है। मां तो गर्भावस्था के दौरान ही अपने बच्चे के संस्कारों का निर्माण करना आरम्भ कर देती है, इसलिए अपनी इस जिम्मेवारी को गहराई से अनुभव करते हुए हम अपने स्वमान में रहकर बच्चों को निरन्तर प्रोत्साहित करते रहें। ऐसी पालना दें ताकि उनका आत्म विश्वास मजबूत हो सके। इसी से ही मां-बाप और बच्चों के सम्बंधों में घनिष्ठता और मधुरता आ सकती है। ब्र.कु.स्वामीनाथन् ने व्यक्ति की वास्तविक पहचान बताई कि हम सभी इस देह रूपी वस्त्र को धारण करने वाली चैतन्य शक्ति आत्मा हैं। राजयोग है ही परमपिता परमात्मा की समीपता को अनुभव करने की विधि। उन्होंने कहा कि जहां भौतिक विज्ञान असहाय हो जाता है वहां फिर असीम दैवी शक्ति का स्रोत कार्य करता है। आज हमारा सम्बंध उस स्रोत से टूट जाने के कारण हम शक्तियों को बाहर से प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। जबकि हमें मेडिटेशन के निरन्तर अभ्यास से अपने वास्तविक स्वरूप को महसूस करते हुए ईश्वरीय ऊर्जा से स्वयं को चार्ज करना है। ब्र.कु.स्वामीनाथन ने अंतिम सत्र को भावनात्मक ढंग से प्रस्तुत करते हुए सबकी आत्मीयता को जगाते हुए कहा कि जिस प्रकार आकाश का अन्त नहीं पाया जा सकता उसी प्रकार धरती पर मां का भी अन्त नहीं पाया जा सकता। जो व्यक्ति मां का आदर सम्मान करना जरूरी नहीं समझते उनके लिए सफलता प्राप्ति बहुत कठिन है। उन्होने बच्चों को पढ़ाई में अपनी एकाग्रता को शक्तिशाली बनाने के टिप्स भी दिए। ब्रह्माकुमारी संस्था के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि धरा पर स्वर्णिम और खुशहाल समाज की स्थापना करना संस्था का मुख्य लक्ष्य है। जिसके लिए हम सबको मिलकर दृढ़तापूर्वक अपने कमजोर संस्कारों को परमात्म ऊर्जा से शक्तिशाली संस्कारों में परिवर्तित करना होगा।

सिरसा। 'जागृत करें अपनी छिपी हुई प्रतिभा को' कार्यक्रम में ब्र.कु.स्वामीनाथन, जे.गणेशन, आई.ए.एस. तथा ब्र.कु.बिन्दु।

इस शिविर के दौरान कार्यकुशलता, सम्बंधों में सद्भाव, एकाग्रता, स्मरण शक्ति, क्रोध प्रबन्धन, राजयोग मेडिटेशन, स्वस्थ जीवन शैली आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया। शिविर में सिरसा के करीब दो हजार भाई-बहनों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

जे.गणेशन जी, आई.ए.एस.डी.सी. सिरसा ने कहा समाज कल्याण के लिए इस प्रकार का आयोजन करके ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जो प्रयास किए जा रहे हैं। मैं भी उनमें शामिल होना चाहूंगा। मुझे यहां आकर बहुत खुशी का अनुभव हो रहा है और मैं आशा करता हूं कि इस शिविर से अवश्य ही लोगों की विचारधारा में महान परिवर्तन आएगा।

डॉ. राज श्री सिंह जी, एस.पी ने कहा प्रभु ने हर इन्सान को माता-पिता के रूप में एक सुन्दर तोहफा दिया है, जो अमूल्य है। जीवन में अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए सबसे कारगर पुरूषार्थ है मात-पिता का आदर और उनकी सेवा। इसके साथ-साथ अगर हम अपने जीवन में आध्यात्मिकता को अपना लेते हैं तो हर शहर अपराधमुक्त बन सकता हैं। ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाएं समाज (शेष पेज 8 पर)

भारत - वार्षिक 170 रुपये
तीन वर्ष 510 रुपये
आजीवन 4000 रुपये
विदेश - 2000 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट माउण्ट आबू) द्वारा भेजें।

ओम शान्ति मीडिया
सम्पादक : ब्र.कु.गंगाधर
ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, तलहटी
पोस्ट बॉक्स नं. - 5, आबू रोड (राज.) 307510
Enquiry For Membership, Mob. No. - 09414006096
(M)- 9414154344, E-mail : mediabkm@gmail.com,
omshantimedia@bkivv.org, webside:www.omshantimedia.info

प्रति

RNI NO RAJHN/2000/721, NEWS PAPER TO POST CONCSSIONAL REGISTRATION NO. RJ/SIROHI/9623/12-14, 12TH TO 14 TH, 22 ND TO 24TH POSTED TO SHANTIVAN POST OFFICE
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, सलाहाकार संपादक: कमल दीक्षित, प्रकाशक: ब्र.कु.करूणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज् मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ.) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।